

प्रेषक,

आलोक कुमार जैन
राजिव
उत्तराचल शासन

सेवा में

समरत् प्रमुख सचिव/सचिव/अपर सचिव
उत्तराचल शासन

कार्मिक अनुभाग-2देहरादून: दिनांक ४ जून वर्षी, 2003

विषय: अनुशारानिक कार्यवाही में दण्ड देने से पूर्व जॉच रिपोर्ट की प्रति अपचारी अधिकारी/कर्मचारी को उपलब्ध कराना।

गंभीरता,

उपर्युक्त विषय पर युश्मे यह कहने का निदेश हुआ है कि भारत राष्ट्र एवं अन्य प्रति मोहम्मद रमजान खाँ (सिविल अपील संख्या 571 ऑफ 1985 ए.आई.आर. 1995, सुप्रीम कोर्ट पृष्ठ संख्या 471) में मा. सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय दि ० 20.11.90 द्वारा यह रिक्वान्ट प्रतिपादित किया गया है कि यदि नियुक्ति प्राधिकारी से इतर विसी अधिकारी के माध्यम से जॉच कराई जाय तो जॉच अधिकारी की आख्या उसकी संस्तुतियों सहित आरोपित सरकारी सेवक को सूचनार्थ उपलब्ध कराई जाय, ताकि आरोपित सरकारी सेवक नियुक्ति प्राधिकारी/दण्डन प्राधिकारी के समक्ष निष्कर्षों के विरुद्ध यदि चाहे तो प्रत्यावेदन प्रस्तुत कर सके।

2— मा. सर्वोच्च न्यायालय के उक्त निर्णय के परिप्रेक्ष्य में पूर्ववर्ती राज्य उत्तर प्रदेश द्वारा आदेश निर्गत किये गये थे। इसी परिप्रेक्ष्य में शासन द्वारा विचारोपरान्त यह निर्णय लिया गया है कि अनुशारानिक कार्यवाही के ऐसे मामलों में जहाँ दण्ड दिये जाने का प्रत्यावर्त हो, परिसर्वोट एण्ड अपील रूल्स पर जारी अन्य विद्यमान शासनादेशों के अतिरिक्त निम्न प्रक्रिया का भी अनुपालन सुनिश्चित किया जाये:-

- (1) अनुशासनिक कार्यवाही के मामले में, जॉच यदि नियुक्ति प्राधिकारी से भिन्न किसी प्राधिकारी द्वारा कराई जाय तो इस प्रकार की जॉच के आधार पर निर्णय लेने से पूर्व जॉच अधिकारी की आख्या (उसकी संस्तुतियों सहित) आरोपित सरकारी सेवक को सूचनार्थ उपलब्ध कराई जाय।
- (2) जॉच आख्या और दण्ड की संस्तुति अपचारी सेवक को पंजीकृत डाक द्वारा भेजने के कम से कम 14 दिवस तक प्रत्यावेदन प्रतीक्षा के उपरान्त दण्ड के प्रत्यावर्त पर विचार किया जाय और यदि कोई प्रत्यावेदन प्राप्त हो जाय तो पहले प्रत्यावेदन पर विचार करके निर्णय लिया जाय तथा दण्डादेश में प्रत्यावेदन पर विचार करके निर्णय लेने का उल्लेख किया जाय।
- (3) सतर्कता विभाग द्वारा सम्पादित जॉच प्रारम्भिक जॉच की श्रेणी में आती है तथा गोपनीय रखाव की होती है। अत्रेतर उन्हें विभागीय कार्यवाही में साध्य रखनुप उद्धृत भी नहीं किया जाता, अतः सतर्कता विभाग द्वारा

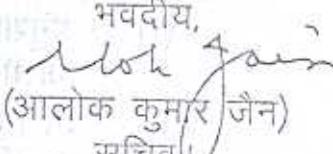
सम्पादित जाँच रिपोर्ट की प्रति अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध कराने का प्रश्न नहीं उठता।

- (4) प्रशासनाधिकरण की जाँच "विभागीय कार्यवाही" की श्रेणी में आती है, अतः उनके आधार पर वृहद् दण्ड देने के पूर्व उसकी प्रति अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध कराया जाना आवश्यक होगा।
- (5) जाँच आख्या की प्रति उपलब्ध कराते हुए, अपचारी कर्मचारी से जो प्रत्यावेदन/स्पष्टीकरण प्राप्त किया जाता है, वह संविधान के अनुच्छेद 311 (2) के अन्तर्गत नैसर्गिक न्याय के कम में सुनवाई का पर्याप्त अवसर देने की परिधि में आता है। अतएव जाँच अधिकारी की आख्या प्राप्त होने पर, नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा, अपना कोई मन्तव्य निर्धारित किये बिना ही, उसे दण्ड की संस्तुतियों, यदि जाँच अधिकारी द्वारा की गई हों, सहित अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध कराई जाय तथा उसके द्वारा निर्धारित समय में प्रत्युत प्रत्यावेदन पर विचारोपरान्त ही दण्ड के विषय में मत रिथर कर विहित प्रक्रिया के अनुसार लोक रोवा आयोग से परामर्श प्राप्त किया जाय।
- (6) सी.एस.आर. के अनुच्छेद 351ए के तहत दण्ड प्रस्तावित होने की दशा में भी, अन्तिम निर्णय लेने के पूर्व जाँच अधिकारी की आख्या अपचारी सरकारी सेवक को उपलब्ध कराई जाय।

3— जाँच अधिकारी की जाँच आख्या में अपचारी कर्मचारी को दोष सिद्ध न पाया गया हो, परन्तु उपलब्ध साक्षों/साक्षियों के द्वारा नैसर्गिक न्याय के कम में सुनवाई का पर्याप्त अवसर देने की परिधि में आता है। अतएव जाँच अधिकारी द्वारा अपचारी कर्मचारी को उपलब्ध कराई जाय तथा उसके द्वारा निर्धारित समय में प्रत्युत प्रत्यावेदन पर विचारोपरान्त ही दण्ड के विषय में मत रिथर कर विहित प्रक्रिया के अनुसार लोक रोवा आयोग से परामर्श प्राप्त किया जाय।

4— अनुरोध है कि कृपया उपरोक्त आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने का कष्ट करें।

भवदीय,

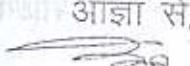

(आलोक कुमार जैन)
सचिव

संख्या-1596(1)/कार्मिक-2/2002, तददिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः—

- 1— रामरत गुण्डलायुक्त, उत्तरांचल।
- 2— समर्त विभागाध्यक्ष/कार्यालयाध्यक्ष, उत्तरांचल।
- 3— सचिव, श्री राज्यपाल, उत्तरांचल।
- 4— सचिव, प्रधान सभा, उत्तरांचल।
- 5— सचिव, लोक सेवा आयोग, उत्तरांचल।
- 6— निवन्धक, उच्च न्यायालय, नैनीताल।
- 7— सचिवालय के समर्त अनुभाग।

आज्ञा से,


(आर. सी. लोहनी)
उप सचिव।